श्रीमती नालप्पाट्टु बालामणि अम्मा

Smt. Nalappattu Balamani Amma

श्रीमती नालप्पाट्टु बालामणि अम्मा, जिन्हें साहित्य अकादेमी आज अपना सर्वोच्च सम्मान *महत्तर सदस्यता* प्रदान कर रही है, मलयाळम के सर्वाधिक प्रतिष्ठित कवियों में हैं और आप साठ वर्षों से भी अधिक समय से निरन्तर लेखन कर रही हैं।

अपने कविता-लेखन का शुभारम्भ आपने किशोरावस्था में किया। आप केरल के मध्य भाग में स्थित एक गाँव में एक सुसंस्कृत, साहित्यिक और अभिजात परिवार में पैदा हुईं और पली-बढ़ीं। कविता आपको उसी सहजता से विरासत में मिली जैसे पेड़ों में पत्तियाँ आती हैं। चित्तंजूर पैलेस के कुञ्ञुण्णि राजा की पुत्री और प्रसिद्ध कवि, दर्शनशास्त्र और मनोविज्ञान पर संदर्भ ग्रंथों के रचयिता और विक्टर ह्यूगो के ले मिज़रेबल के मलयाळम अनुवादक नालप्पाट्टु नारायण मेनोन की भांजी होने के नाते आपने अपने बचपन से ही परिष्कृत साहित्यिक रुचि और काव्य-दीप्ति को आत्मसात कर लिया। आपके मामा के पुस्तकालय में न केवल श्रेष्ठ साहित्यिक कृतियाँ थीं, बल्कि दर्शन और मनोविज्ञान तथा ज्ञान की कई दूसरी शाखाओं की भी पुस्तकें थीं। आपने औपचारिक रूप से कोई शिक्षा नहीं पायी, क्योंकि उन दिनों (आपका जन्म जुलाई 1909 में हुआ) अभिजात परिवार की लड़कियों को स्कूल भेजने का चलन नहीं था। घर पर ही शिक्षकों द्वारा संस्कृत और अंग्रेज़ी की प्रारंभिक शिक्षा प्राप्त करके आपने अपने मामा के पुस्तकालय का सदुपयोग करते हुए अपने ज्ञान का विस्तार किया। दर्शन, मनोविज्ञान और कई दूसरे अनुशासनों में आपके उल्लेखनीय ज्ञान का स्रोत व्यापक पठन-पाठन ही है। आपकी कविता में उपलब्ध बौद्धिक तत्त्व का अनुपात आपके समकालीन अन्य कवियों की कृतियों में उपलब्ध बौद्धिक तत्त्व की अपेक्षा बहुत अधिक है।

आपका विवाह श्री वी.एम. नायर से हुआ जो कलकत्ता की एक यूरोपीय कम्पनी में एक उच्च प्रबंधकीय अधिकारी थे। वहाँ आप एक लम्बे अरसे तक रहीं। अपने पति से प्रोत्साहन पाकर आप काव्य-सृजन में जुटी रहीं। कविता के प्रमुख विषय थे—माँ का ममत्व, सभी के प्रति स्नेह, विशेषकर पीड़ित मानवता के लिए, और ऐसी ही दूसरी कोमल भावनाएँ जिन्हें शुद्ध, पवित्र और दिव्य कहा जा सकता है। बच्चे आपकी दृष्टि में ईश्वर की सांसारिक अभिव्यक्ति हैं। बच्चों में आप एक दैवी महत्ता, शुद्धता और भव्यता पाती हैं। "गौरव के मेघवृत्त फैलाते, आते हैं हम प्रभु के पास से, जो है हमारा घर।" वर्ड्सवर्थ के ये शब्द ठीक वही कह रहे हैं, जो हम आपकी कविता में अंकित बच्चों से सुनते हैं।

Smt. Nalappattu Balamani Amma on whom the Sahitya Akademi is conferring its highest honour of Fellowship today is one of the most eminent poets in Malayalam, who has been writing poetry incessantly for more than sixty years.

She started writing poetry even as a teen-ager. Born and brought up in a village in central Kerala in an aristocratic family with sublime cultural traditions and literary background, poetry came to her as leaves to trees. Daughter of Kunhunni Raja of Chittanjoor Palace, and niece of Nalappattu Narayana Menon an eminent poet, author of reference books on philosophy and psychology and translator of *Les Miserables* of Victor Hugo into Malayalam, she had, from her very childhood, imbibed refined literary taste and flare for poetry. Her uncle's library contained not only great literary works but also books on philosophy and psychology and several other branches of knowledge. Though she did not have formal education, as girls from aristocratic families were rarely sent to schools in those days (she was born in July 1909), she learned Sanskrit and earned a basic knowledge of English from tutors engaged at home, and she expanded her knowledge by making good use of her uncle's library. Wide reading is the source of her remarkable knowledge in philosophy, psychology and certain other disciplines. The proportion of intellectual element found in her poetry is much higher than in the work of most of the contemporary poets.

She was married to Sri V.M. Nair, a senior managerial official in a European company in Calcutta where she lived for a long time. Encouraged and inspired by him she continued writing poetry. The main themes were motherly love, affection for all, especially for the suffering sections of humanity and such other fine sentiments that can be qualified as pure, holy and divine. Children are for her the worldly manifestations of God. She finds a divine greatness, purity and glory in children. "Trailing clouds of glory do we come from God who is our Home." These words of Wordsworth are exactly what the children depicted in her poetry would tell us.

Her collections of lyrical compositions began to be published from 1930 onwards, which come to more than twenty volumes. On the basis of themes and perceptual

आप की प्रगेयात्मक रचनाएँ 1930 से प्रकाशित होने लगीं और अब तक 20 से अधिक खण्ड छप चुके हैं। विषयवस्तु और बोध के आधार पर आपकी काव्य-कला के विकास के तीन चरण देखे जा सकते हैं । पहले चरण में 1930 से प्रारम्भ दो दशकों की कालावधि आती है, जिसमें प्रमुख भाव-संसार माँ और बच्चे का है। पूरी सृष्टि को माँ की दृष्टि से देखा गया है। बालामणि अम्मा की कविता में रोमांटिक कवि का "मैं" समग्रत: माता-मय है, सृष्टि की प्रत्येक वस्तु प्यारे बच्चे की तरह मोहक हो जाती है। सृष्टि में कोई भी चीज़ कुरूप या घृणास्पद नहीं है, क्योंकि प्रत्येक चीज़ हमारी स्वयं की सन्तति के रूप में सुन्दर प्रतीत होती है। दूसरी ओर, जब इस रहस्यपूर्ण सृष्टि को एक विराट माँ के रूप में देखा जाता है तो नन्हा-सा "मैं" उसकी गोद में स्नेहपूर्वक संरक्षित बच्चे-सा लगता है। इस प्रकार, इस चरण में कवि की दृष्टि एक अनूठी दार्शनिक विशुद्धता और आध्यात्मिक उत्कर्ष से युक्त है। इस कालावधि में आनेवाले उनके नौ काव्य संकलन हैं: *कूप्पुकै* (1930), *अम्मा* (1934), *कुटुम्बिनी* (1936), *धर्ममार्गत्तिल्* (1938), *स्त्रीहृदयम्* (1939), *प्रभांकुरम्* (1942), *भावनयिल्* (1942)] *ऊञ्ज्ञालिल्* (1946), *कळिकोट्टा* (1949)।

दूसरे चरण में "मैं" के लोक का चित्रण समाज से जोड़कर किया गया है। इस दौर की कविता की विशेषताएँ हैं—भौतिकवादी और आध्यात्मिक समस्याओं से ग्रस्त मानव समाज के प्रति गहरी चिन्ता और मानवता की लाइलाज प्रतीत होती बुराइयों के प्रति गहरी वेदना। ऐसा नहीं है कि इस दौर में माँ और बच्चे की दुनिया पूरी तरह से रूपांतरित हो गई हो। दादी माँ की नज़रों से दीख पड़ने वाले बच्चे को वस्तुत: अधिक गौरवशाली रूप में प्रस्तुत किया गया है। लेकिन कवि की गहरी चिन्ता का प्रमुख पक्ष है मनुष्य जाति की विविध व्याधियाँ और उसके उपचार। समाजों और जीवन की व्यवस्थाएँ निर्मित करने की प्रक्रिया में मनुष्य द्वारा पैदा की गई समस्याओं के हल की तलाश में कवि की दृष्टि किंवदंतियों, मिथकों तथा महाकाव्यों में पाये जानेवाले चरित्रों तक पहुँचती है। कवयित्री अपनी इन कविताओं में वर्ग-संघर्ष, सर्वसत्तावाद, स्वार्थपरकता, सत्ता की प्यास आदि की समस्याओं में निहित मूलभूत मनोवैज्ञानिक तथ्यों का विश्लेषण करती है। प्राचीन साहित्यिक कृतियों से चुने गये चरित्र प्रतीकात्मक रूप से उन मानसिक सच्चाइयों और प्रवृत्तियों के प्रतिनिधि हैं, जो मनुष्य को विनाश या मुक्ति तक ले जाती हैं। ये कविताएँ आख्यानपरक नहीं हैं जो पुरानी कथाओं को पुन: सुनाएँ, बल्कि ये नाटकीय एकालाप हैं जिनमें सजीव "स्व" एकालाप करते समय स्वयं अपने जीवन और कार्यों के बारे में सोचने और उनका पुनर्मूल्यांकन करने को बाध्य होते हैं। इस प्रक्रिया में यद्यपि कहानियाँ तो वही रहती हैं, लेकिन व्यक्तित्वों का ऐसा रूपांतरण हो जाता है कि वे समकालीन परिस्थितियों में मानवीय विडंबनाओं के प्रतिरूप बन जाते हैं। मूर्तिमान हिंसा के प्रतीक परशुराम अपने पाप स्वीकार करने को बाध्य होते हैं और हिंसा के मार्ग की परम निरर्थकता घोषित करते हैं। बालामणि अम्मा की कविता में चित्रित विश्वामित्र हमें आनुवंशिक प्रौद्योगिकी और रॉकेट विद्या वाले आधुनिक वैज्ञानिकों का स्मरण दिलाते हैं। अन्तत: विश्वामित्र भी स्वीकार करते हैं कि मानसिक शक्तियाँ नहीं, बल्कि दया, प्रेम और दूसरों की ख़ुशी के लिए आत्मसमर्पण जैसे मानसिक गुण ही चरम मूल्य हैं। इस दूसरे दौर की रचनाएँ हैं: *वेळिच्चत्तिल्*

nature, three phases can be traced in the evolution of her art of poetry. The first phase belongs to the two decades beginning 1930, in which the predominant emotional world is that of mother and child. The whole universe is reviewed through the mother's eyes. When the Magnificent "I" (Moi-le-Magnifique) of the Romantic poet is all mother in Balamani Amma's poetry, everything in the universe assumes the charm of the darling child. There is nothing ugly or detestable in the universe, because everything appears beautiful as one's own offspring. On the other hand, when the mysterious universe is viewed as the great mother, the humble 'I' appears as the child in her lap, affectionately protected. The vision in this phase, thus possesses a unique philosopic magnitude and metaphysical grandeur. Nine volumes of her poetry belong to this period: *Kooppukai* (Worshipfully folded hands, 1930), *Amma* (Mother, 1934), *Kudumbini* (The Housewife, 1936), *Dharmamargattil* (Along the Path of Duty, 1938), *Strihrdayam* (The Mind of Woman, 1939), *Prabhankuram* (The Emerging Rays, 1942), Bhavanayil (World of Imagination, 1942), *Oonjalil* (On the Swing, 1946) *Kalilkkotta* (The Basket of Toys, 1949)

In the second phase, the world of 'I' is depicted in relation to the society. Great concern for human society with its materialistic and spiritual problems and a deep anguish at the apparently incurable ills of humanity are the characteristics of poetry during this phase. It is not that the world of woman and child is entirely transformed. Child, as it appears to the eye of the grandmother, is indeed presented in a more glorified view. But the dominant aspect is the poet's deep concern for the various maladies of mankind and their remedies. This quest for solution for problems created by man in the process of building up systems of societies and life, has led the poet even to the personalities in legends, myths, and epic poetry. The poet analyses in the poems on them the basic psychological facts involved in the problems of class-struggle, authoritarianism, selfishness, thirst for power, etc. The personalities chosen from ancient literary works symbolically represent mental truths and attitudes that lead men to doom or redemption. These are not narrative poems meant for retelling the old stories, but are dramatic monologues in which the speaking selves are forced to have a rethinking and reassessment of their own lives and deeds. In this process, even though the stories remain the same, the personalities undergo such transformation that they represent human predicaments relevant in contemporary situations. Parasurama, who is violence incarnate, is made to confess his sins and to declare the ultimate futility of the path of violence. Viswamitra, in the poem of Balamani Amma, reminds us of the modern scientist with his technologies in genetic engineering and rocketry. He is also made to admit that the ultimate values are not the faculties but the qualities of mind, such as mercy, love, and dedication to the cause of others' happiness. The volumes in the second phase are:

(1951), *अवर पाडुन्नु* (1952), *प्रणामम्* (1954), *लोकान्तरङ्ङळिल्* (1955), *मुत्तश्शी* (1962), *अम्बलत्तिल्* (1967), *नगरत्तिल्* (1968)।

तीसरा दौर (1970-1990) युग की विचारधारा के परिप्रेक्ष्य में वैयक्तीकरण का दौर है और इस अवधि की कविताएँ पिछली प्रवृत्तियों का सम्मिश्रण हैं। इसी दौर में कवयित्री ने भीष्म और वाल्मीकि जैसे आद्य चरित्रों की कहानियों की पुनर्व्याख्या की। आपकी कविता के भीष्म अम्बा के मन पर सांघातिक चोट कर उसका अपमान करने के लिए स्वयं दोषी महसूस करते हैं। कवयित्री की दृष्टि में भीष्म की तीरों की शय्या वस्तुत: उनका दोषी अंतर्मन ही है। इसी प्रकार, वाल्मीकि अपने परिवार को त्यागकर अनुतप्त मनवाला व्यक्ति है और इस कारण क्रौंच-मिथुन में से एक की हत्या करनेवाले व्याध को शाप देने का नैतिक अधिकार खो चुका है।

आपके तीसरे दौर में कुछेक छोटे संग्रह और एक वृहत् संग्रह *नैवेद्यम्* (1987) प्रकाशित हैं। इससे पूर्व एक संकलन *सोपानम्* (1958) भी है।

इस तरह विशाल परिमाण में काव्य-सृजन, मानवीय अस्तित्व को समझने की गहरी दार्शनिक अन्तर्दृष्टि, सौन्दर्यपरक संवेदनशीलता, और सर्वोपरि प्रेम, दया, समर्पण और मानवीय न्याय तथा गरिमा के लिए सम्मान जैसी कोमल मानवीय भावनाओं का अविच्छिन्न प्रवाह ऐसा दुर्लभ सम्मिश्रण है, जो एक विवेकी पाठक को विस्मय, श्रद्धा और पूजा की भावना से भर देता है। बालामणि अम्मा की कविता प्रत्येक दृष्टि से निष्कलंक है।

मुत्तश्शी कविता-संग्रह के लिए साहित्य अकादेमी पुरस्कार से सम्मानित होने तथा पद्मभूषण से अलंकृत होने के साथ ही राष्ट्र ने आपकी प्रतिभा को व्यापक मान्यता दी। अपने गृहराज्य से भी आप अनेक पुरस्कारों से सम्मानित हुईं। 1947 में तत्कालीन कोचीन राज्य के विद्वान-शासक परीक्षित राजा ने आपको 'साहित्य निपुणा' की उपाधि से विभूषित किया। केरल के साहित्यिक क्षेत्रों में आप 'अम्मा' के नाम से जानी जाती हैं, न केवल अपनी कविताओं के लिए जोकि माँ की दुनिया को प्रक्षेपित करती हैं, बल्कि अपने मातृसुलभ व्यक्तित्व के लिए भी, जिससे यह स्पष्ट हो जाता है कि क्यों उनकी कोई प्रतिकूल आलोचना कभी नहीं हुई।

मलयाळम की एक शीर्ष कवयित्री के रूप में नालप्पाट्टु बालामणि अम्मा को साहित्य अकादेमी अपना सर्वोच्च सम्मान *महत्तर सदस्यता* प्रदान करती है।

Velicchattil (Light of Truth, 1951), *Avar Padunnu* (They Sing, 1952), *Pranamam* (Obeisance, 1954), *Lokantarangalil* (In the Other Worlds, 1955), *Muttassi* (Grand mother, 1962), *Ambalattil* (In the Temple, 1967), and *Nagarattil* (In the City, 1968).

The third phase (1970-1990) is one of individuation in the Jungian sense, and the poems of the period are an amalgamation of the earlier trends. It was during this phase that the poet gave her reinterpretations to the stories of archetypal characters such as Bhishma and Valmiki. Bhishma, in her poem, suffers from guilty conscience for inflicting fatal injury and insult to the mind of Amba. His bed of thorns is according to the poet his guilty conscience. Similarly, Valmiki is depicted as possessing a remorseful mind for having deserted his family and thus depriving himself of the moral right to fling a curse on a poor forest hunter who had killed one of the couple of birds.

The third phase consists of a few small volumes and a large collection titled *Naivedyam* (1987). An earlier compilation is *Sopanam* (1958).

The voluminous poetic writing, the depth of philosophic insight into human existence, the aesthetic sensibility and above all, the incessant flow of tender human feelings of love, mercy, devotion and respect for human justice and dignity make a rare combination that leaves a discerning reader in a state of astonishment, adoration, and reverence. Immaculate in every sense is Balamani Amma's poetry.

The talents of the poet were recognised by the nation when the Sahitya Akademi award (for the collection, *Muttassi*) and "Padmabhushan" were conferred on her. She has also won several awards in her home state.

The scholar-ruler Pareekshit Raja of the erstwhile Cochin State had conferred the title of "Sahitya Nipuna" on the poet in 1947. She is known as "The Mother" in the literary circles of Kerala, not only because her poetry projects the world of the mother, but also because of her endearing motherly personality, which explains why adverse criticism is singularly absent in her case.

For her eminence as a poet in Malayalam, the Sahitya Akademi confers its highest honor, the Fellowship, on Nalappattu Balamani Amma.